कथा आशकरन की।

आशकरन राजा नरवरगढ़ के महाराजा भीमसिंह के बेटे जाति के कछवाहे स्वामी कील्हजी के चेले धर्मात्मा और परम भागवत गुणवान् बुद्धिमान् मधुर बोलनेवाले शूर उदार दृढ़चित्त साधुसेवी श्रीजानकी-वल्लभ और राधावल्लभजन के नेमवाले अर्थात् श्रीकृष्णस्वामी और श्रीरघु-नन्दन महाराज को एकरूप जानते थे दशघड़ी दिन चढ़ेतक भगवत् की सेवा पूजन अत्यन्त प्रेम से करते थे और द्वारपालों को आज्ञा थी कि कोई मनुष्य उस समय साम्हने न आने पावे और न किसी मामिले का सन्देह। कोई संयोगवश कि बादशाह की सवारी आई प्रभात को किसी कार्य शीघ्र के वास्ते बुलाया बादशाही सिपाही जो आये तो किसी ने उनकी आज्ञा का पालन न किया और न राजातक वृत्तान्त पहुँचाया उन सिपाहीलोगों ने वृत्तान्त सब बादशाह के हजूर में पहुँचाया। बाद-शाहने क्रोध करके फौज भेजी परन्तु तबभी राजातक कोई न गया और न कुछ भय फौज के आनेका हुआ सेनापति ने बादशाह को लिख भेजा कि फौज के आनेपरभी कोई राजातक वृत्तान्त नहीं पहुँचता जो आज्ञा होय तो युद्ध प्रारम्भ होय। बादशाह यह बात सब सुनकर आप आया और दरवानों ने केवल एक बादशाह को भीतर जानेदिया। बादशाहने देखा कि आशकरनजी सेवा पूजन करके भगवत् के साम्हने दण्डवत् करते हैं बादशाह देरतक खड़ा रहा नितान्त तरवार राजा के पाँव में मारी कि एँड़ी कटगई परन्तु राजा ने तब भी कुछ असावधानी न की और न घाव का भान हुआ क्योंकि मन भगवद्रूप में तदाकार हो रहा था और जिसओर मन न होय उसओर का दुःख सुख कब व्यापित होता है सो भगवत् का वचन है कि जिनलोगों का मन मेरी कथा और चरित्रों में नहीं लगा दुःख सुख उनको मालूम होते हैं राजा दण्डवत् करने के पीछे मन्दिर के द्वारपर चिलमन डारकर बाहर आये और बादशाह को देख-कर रीति के अनुसार मिलने की जो बादशाही मर्याद है सो सब की। बादशाह यह वृत्तान्त सब देखकर और राजा के विश्वास और साँची प्रीति पर बहुत प्रसन्न हुआ और लज्जित हो अपने अपराध को क्षमा कराया और मर्याद राजा की बड़ी की सब राजों का शिरोमणि समझा राजा जब परमधाम को गये बादशाह ने सुनकर बड़ा शोच किया और श्रीमोहनजी के मन्दिर में जो राजा सेवन करता था तिसकी सेवा व राग

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/nabhadasa1900/0282
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG